[Shri T. R. Shamanna]

Reserve Bank will be forced to assist the growth and working of urban banks.

Many urban banks are working up to the expectation of the Reserve Bank. There may be a few mismanaged banks and this should not hinder the progress of all cooperative banks. Reserve Bank may fix good norms for cooperative banks and licence may be given to start new banks as before or start new branches only after examining the financial strength of the bank and also the need of the new area which the bank wishes to serve. I strongly urge upon the Government to stay the "No New Bank, No Branch" order and help the urban banks to serve in a better way the urban population.

(iv) INDUSTRIALISATION OF SITAPUR AREA BY DECLARING IT AN INDUSTRIALLY BACKWARD AREA

श्री राम लाल राही (मिसरिख) : उपाध्यक्ष महोदय, आदिकाल से सुप्रसिद्ध ऋषियों की तपस्थली नैमिष क्षेत्र एवं श्री आचार्य नरेन्द्र देव जी की जनस्थली जनपद सीतापुर की चप्पा-चप्पा भूमि जरखेज एवं उपजाऊ है। गेहूं, धान एवं अन्य अनाजों की अनेक किस्मों के साथ ही शायद नकदी फसलों जैसे : गन्ना, मूंगफली, जूट आदि के उत्पादन की क्षमता इस जनपद की पग-पग भूमि में है।

आजादी के पूर्व के चन्द सीमित उद्योगों के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के जनपद सीतापुर में मात्र एक बनस्पति उद्योग अभी कुछ दिन पूर्व लगा, वह भी निजी क्षेत्र में है। इस दिशा में सरकार ने कभी भी यदि सोचा भी तो उपेक्षा की दृष्टि से, जबकि अरसे से प्रदेश की सरकारों में इस जनपद से प्रभावशाली मंत्री रहे हैं और आज भी हैं।

इस जनपद के जन-प्रतिनिधि और जनता मांग करती रही है कि सीतापुर को औद्योगिक रूप से पिछड़ा घोषित किया जावे और निजी अथवा सरकारी क्षेत्रों के माध्यम से उद्योग स्थापित किए जाने के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। मैं खेद के साथ कह रहा हूं कि सरकार की उदासीनता के कारण जनपद की जनता और उत्साही उद्यमियों को निरन्तर निराशा झेलनी पड़ी है। सहकारी क्षेत्र में एक चीनी मिल "दि किसान सहकारी चीनी मिल महमूदाबाद" के नाम से बननी थी जो अब भी खटाई में पड़ी है। एक जूट मिल को सार्वजनिक क्षेत्र में लगाए जाने की मांग की गई, पर सीतापुर में कुछ आयातित नेता रोड़ा डालते रहे हैं। निजी क्षेत्र में लगाए जाने के लिए उत्साही उद्यमियों को प्रोत्साहन देने में भी सरकार कतरा रही है। एक कागज की मिल लगाए जाने के संबंध में निरंतर मांग की जाती रही है। उत्साही उद्यमियों ने उत्तर प्रदेश सरकार से केन्द्र सरकार तक प्रोत्साहन दिए जाने संबंधी विस्तृत योजनाओं पर चर्चा भी की, पर सरकार की उदासीनता के कारण निराश हो इस जनपद को छोड़ दूसरे जनपदों व स्थानों में उद्योगों के लिए भाग जाना पड़ा। अधिकांश लोग गरीबी की रेखा के नीचे का जीवन-यापन कर रहे हैं। जहां तक औद्योगिक संभावनाओं का प्रश्न है,

साधनों तथा श्रमशक्ति की सर्वाधिक उपलब्धता है। प्रदेश से लेकर केन्द्र तक की राजधानियां इस जनपद को राष्ट्रीय मांग से सीधे जोड़ती हैं। कुछ उत्साही उद्यमी भी चाहते हैं कि इन जनपद में उद्योग लगा कर आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने और बेरोजगारों को काम देने की भूमिका में महत्वपूर्ण योगदान कर सकें।

मैं इस लोक महत्व के विषय को सदन में उठाते हुए केन्द्र सरकार से मांग करता हूं कि केन्द्र सरकार जनपद सीतापुर को औद्योगिक क्षेत्र में पिछड़ा घोषित करे और केन्द्रीय सरकार की "कैपिटल एवं सब्सीडी" स्कीम के अंतर्गत उत्साही उद्यमियों को प्रोत्साहित करें। मेरी यह भी मांग है कि सरकार सार्वाजनिक क्षेत्र में एक जूट मिल, एक कागज मिल तथा वनस्पति उद्योग लगावे।

(v) SPREAD OF T. B. IN DESERT VILLAGES OF RAJASTHAN

श्री दौलत राम सारण (चुरु): उपाध्यक्ष महोदय, लगातार अकाल से पीड़ित, बेरोजगारी व अर्द्ध बेरोजगारी से चिन्तित संतुलित एवं पौष्टिक आहार के अभाव में कड़ी मेहनत, चिंताओं एवं अभाव से क्षणिक राहत के लिए नशीली वस्तुओं के सेवन के प्रसार के कारण राजस्थान के रेगिस्तानी भू-भाग के निवासियों का स्वास्थ्य रोगों से बचाने की शक्ति के ह्रास के कारण दिन प्रतिदिन खराब होता जा रहा है। इस क्षेत्र के निवासियों में टी० बी० (राजयक्षमा) रोग व्यापक रूप से फैलता जा रहा है। मैंने अपने क्षेत्र चुरू की आठ तहसीलों के विभिन्न चिकित्सकों से संपर्क करके इस संबंध में जानकारी की तो पता चला कि हर 10 रोगियों में से 6 रोगी टी० बी० से पीड़ित होते हैं। चूरू जिले से संलग्न झुंझनू जिले के तीन हेतमसरबास, कगेसरा, पत्तेसरा गांवों के निवासियों की 5 डाक्टरों ने जांच की तो 99 प्रतिशत पाजिटिव मामले मिले। इसी प्रकार अन्य रेगिस्तानी जिलों की स्थिति है। टी० बी० रोग की व्यापकता के संबंध में जोधपर से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में भी काफी समाचार मिलते हैं।

टी० बी० (राजयक्षमा) एक संक्रामक रोग है। इसका इतना अधिक व्यापक प्रसार बहुत खतरनाक और चिंताजनक है। राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र के निवासियों के स्वास्थ्य परीक्षा करने और रोग निरोध एवं चिकित्सा की समुचित व्यवस्था करने की गंभीर स्थिति पैदा हो गई है।

आशा है केन्द्रीय सरकार इस ओर विशेष रूप से ध्यान देकर समुचित व्यवस्था कराएगी।

(vi) NEED TO PREVENT EXPLOITATION OF OF LABOUR IN INDIA

SHRI K. LAKKAPPA (Tumkur): According to a recent estimate of I.L.O. India has a labour force of children of more than twelve million. This constitutes a third of Asia's child labour and a fourth of world's working children. Earlier the 1971 census indicated that there were more than ten million child workers of less than fifteen years of age. Most of the child workers are found in rural areas where there is no clear indication of their working conditions. In the urban areas the working conditions of employed children are far from satisfactory. In many trades, as against four and half hours prescribed under the existing legislation, the working hours of children range from six to eight hours. In some fields there is virtually no difference between the working hours of a child and an adult.

There is no uniform minimum age laid down in India for employment of children. Children of very tender age are found working in industries